CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 10th May 2021, Revised on 18th May 2021, Accepted 30th May 2021

शोधपत्र

उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की वस्तुस्थिति एवं सुझाव

* रिज़वाना शेख, *पीएच.डी. शोधार्थी*
डॉ. सरिता मेनारिया, *सहायक आचार्य*
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड.टू.बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राजस्थान)
Email - sheikhriz50@gmail.com, Mob. 8003456340

मुख्य शब्द - *मुस्लिम छात्रा, वस्तुस्थिति, सुझाव आदि।*

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की वस्तुस्थिति एवं सुझाव पर केंद्रित है। शोध में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति का पता लगाया गया है।

इस शोध अध्ययन के लिए उदयपुर जिले के 10 स्नातक एवं 10 स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में अध्ययनरत 600 मुस्लिम छात्राओं का चयन किया गया है। मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति का पता करने के लिए विद्यार्थी प्रवेश पंजिका एवं विद्यार्थी उपस्थिति पंजिका का अवलोकन किया गया। नामांकन तथा ठहराव की स्थिति के सुझाव हेतु खुली प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग दत्त विश्लेषण के लिए किया गया था।

प्रस्तुत शोध के परिणाम स्पष्ट करते है कि उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में कुल नामांकन में से मुस्लिम छात्राओं का नामांकन बहुत ही कम पाया गया है। मुस्लिम छात्राओं के ठहराव में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कमी दर्ज की गई है। स्नातक–स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन की स्थिति में सुधार हेतु सरकार द्वारा उच्च शिक्षा को निःशुल्क, अनिवार्य और सार्वभौमिक बनाया जाएं एवं छात्राओं के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, यूनिफॉर्म एवं नोटबुक की व्यवस्था की जानी चाहिए।

समस्या की पृष्ठ भूमि, औचित्य एवं महत्त्व

शिक्षा आज की सबसे बड़ी जरूरत है लेकिन मुस्लिम समाज के लोगों की इसमें रुचि नहीं हैं। समाज के पांच फीसदी लोग ही उच्च शिक्षित है। यह समाज के लोगों के लिए चिंता का विषय है।

देश की जनसंख्या का बडा भाग (34.62 प्रतिशत) तथा प्रदेश की 38.97 प्रतिशत आबादी अब भी अशिक्षा के अन्धकार में डूबी हुई है। मुस्लिम समाज के वंचित वर्ग की बालिकाएँ अनेक सामाजिक पारिवारिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं से घिरे होने के कारण शिक्षा से नहीं जुड़ पाती है। बच्चों को मिलने वाली शिक्षा का चयनाधिकार अभिभावकों के पास सुरक्षित रहेगा। इस कठोर एवं दृढ़ संकल्प

की घोषणा के पांच दशक के पश्चात् आज प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क तो हो गई परन्तु सबके लिए शिक्षा आज भी सुनिश्चित नहीं की जा सकी है। इससे उच्च शिक्षा की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है।

शिक्षा की महत्त्व को जानने के बावजूद भी मुस्लिम संप्रदाय की सांस्कृतिक परंपरा शिक्षा की ओर बढ़ने से रोक देती है जिसका सबसे अधिक प्रभाव निम्न एवं आर्थिक रूप से कमजोर मुस्लिम परिवारों पर पड़ता है, इसके साथ ही मौलवियों एवं मूल्लाओ के फरमानों के चलते मुस्लिम छात्राएँ के मन में डर बना रहता है। आधुनिकता के प्रभाव के प्रति अपने मन को केंद्रित नहीं कर पाती इसी कारण मुस्लिम छात्राएँ उच्च शिक्षा से वंचित हो जाती है।

अधिकांश मुस्लिम परिवारों मे शिक्षा पर ध्यान नही दिया जाता है। विद्यालय व कॉलेज स्तर तक भेजने वालों की संख्या में बडी कमी है। इसका कारण निर्धनता, परिवार का बड़ा आकार, माता पिता का अशिक्षित होना है। धार्मिक रुढ़िता के कारण भी शिक्षा नहीं दी जाती है। मुस्लिम समाज में अधिकांश पुरुष वर्ग अशिक्षित है। ऐसी स्थिति में लड़कियों की शिक्षा तो दूर की बात हो जाती है।

भारतीय मुस्लिम परिवारों की एक समस्या यह भी है कि वह पूर्ण रूप से न तो इस्लामिक परंपराओं का निर्वहन कर पाते हैं और ना ही भारतीय संस्कृति का आचरण ढंग से कर पाते हैं। धर्मांतरण के कारण इस्लाम के धर्म को अपनाते हैं साथ ही मुस्लिम होने का दावा करने के लिए इस्लाम की मान्य पुरातन परंपराओं के प्रति आस्था प्रकट करते हैं और धीरे–धीरे ऐसा करने के कारण समकालीन शैक्षिक वातावरण से दूर होने लगते हैं। इस्लाम में महिलाओं को उच्च शिक्षा ग्रहण करने और आवश्यकता पड़ने पर घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर रोजगार करने में कोई मनाही नहीं है, पर इनके लिए शरई, इस्लामी, कानून बनाए गए जिनका पालन करना अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की वस्तुस्थिति क्या है? किस कारण वो शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहे है? इन प्रश्नों के उत्तर जानने एवं सुझावों का पता लगाकर शिक्षा जगत में अपना योगदान प्रदान करने के लिए यह शोध किया गया।

शोध शीर्षक

उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की वस्तुस्थिति एवं सुझाव।

शोध के उद्देश्य

(1) स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन की तुलनात्मक स्थिति का पता लगाना।

(2) स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के ठहराव की तुलनात्मक स्थिति का पता लगाना।

(3) स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

समस्या का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक क्षेत्र के अन्तर्गत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति एवं सुधार हेतु सुझावों का चयन किया गया।

समस्या का परिभाषीकरण

1. **मुस्लिम छात्रा :–** प्रस्तुत शोध में मुस्लिम छात्राओं से तात्पर्य स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों मे पढ़ने वाली मुस्लिम परिवारों की वह लड़कियाँ जो शिक्षा प्राप्त कर रहीं है।
2. **वस्तुस्थिति :–** प्रस्तुत शोध में वस्तुस्थिति से तात्पर्य स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति का पता लगाने से है।

3. **सुझाव :–** स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति में सुधार हेतु छात्राओं से सुझाव प्राप्त करना।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य को उदयपुर जिले के 10 स्नातक एवं 10 स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं तक ही सीमित रखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया है। शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उदयपुर जिले के 10 स्नातक एवं 10 स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्ययनरत 600 मुस्लिम छात्राओं का जिसमें 300 स्नातक स्तर की मुस्लिम छात्राएँ एवं 300 स्नातकोत्तर स्तर की मुस्लिम छात्राओं का चयन किया गया है।

विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

उपकरण

1. प्रस्तुत अध्ययन में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की स्थिति का पता करने के लिए विद्यार्थी प्रवेश पंजिका एवं विद्यार्थी उपस्थिति पंजिका का अवलोकन किया गया।
2. नामांकन तथा ठहराव की स्थिति के सुझाव हेतु खुली प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय तकनीक

प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त विश्लेषण के लिए प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक को उपयोग में लिया गया।

परिकल्पना

1. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के ठहराव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

दत्त विश्लेषण

1. **स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन**

सारणी संख्या–1 स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन का अन्तर

स्नातक महाविद्यालय N=10			स्नातकोत्तर महाविद्यालय N=10			प्रतिशत अन्तर
स्नातक पाठ्यक्रम			स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम			
कुल नामांकन	मुस्लिम छात्राओं का नामांकन	मुस्लिम छात्राओं के नामांकन का प्रतिशत	कुल नामांकन	मुस्लिम छात्राओं का नामांकन	मुस्लिम छात्राओं के नामांकन का प्रतिशत	
8542	670	7.84	4976	339	6.81	1.03

व्याख्या

सारणी संख्या–1 में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत समग्र मुस्लिम छात्राओं के नामांकन का अन्तर ज्ञात किया गया। स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं का नामांकन 7.84 प्रतिशत प्राप्त हुआ एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं का नामांकन 6.81 प्रतिशत प्राप्त हुआ। तुलनात्मक रूप से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की अपेक्षा स्नातक पाठ्यक्रम में 1.03 प्रतिशत मुस्लिम छात्राओं का नामांकन अधिक पाया गया है लेकिन यह अन्तर बहुत कम है। अतः परिकल्पना संख्या–1 ''स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'', स्वीकार की जाती है। आरेख–1 में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन के अन्तर को दर्शाया गया है।

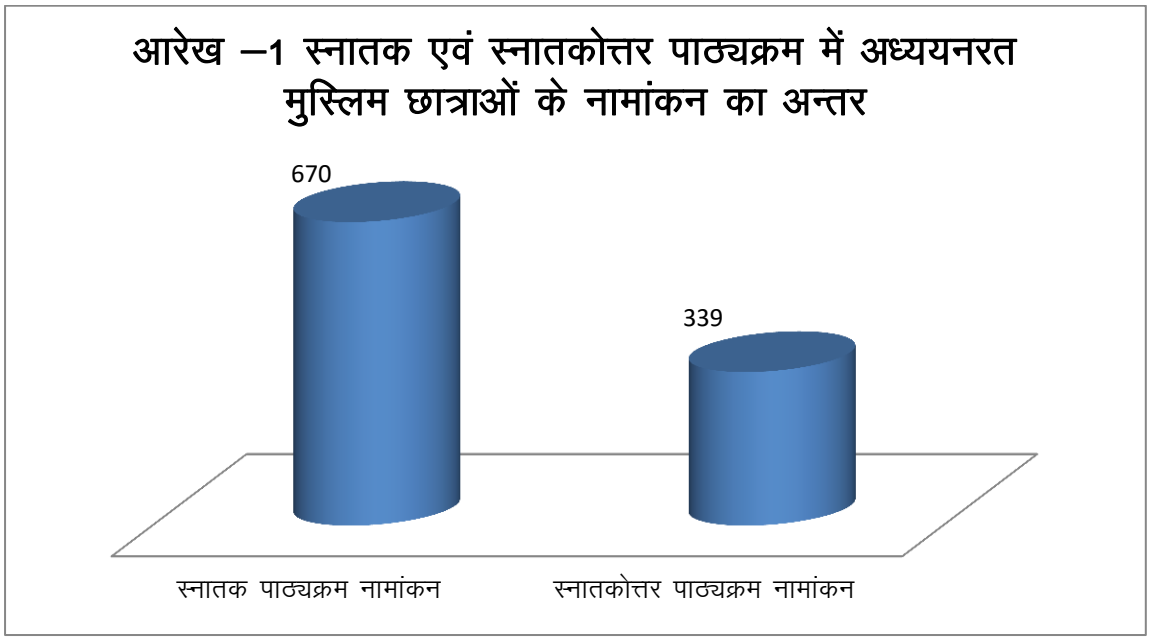

2. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के ठहराव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

सारणी संख्या–2

मुस्लिम छात्राओं के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में ठहराव का अन्तर

स्नातक महाविद्यालय N=10			स्नातकोत्तर महाविद्यालय N=10			प्रतिशत अन्तर
मुस्लिम छात्राएँ						
स्नातक पाठ्यक्रम			स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम			
नामांकन	उपस्थिति	ठहराव	नामांकन	उपस्थिति	ठहराव	
670	549	81.94	339	309	91.15	9.21

व्याख्या

सारणी संख्या–2 में समग्र मुस्लिम छात्राओं के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में ठहराव की तुलनात्मक स्थिति ज्ञात की गई। मुस्लिम छात्राओं का ठहराव स्नातक पाठ्यक्रम में 81.94 प्रतिशत एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 91.15 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। तुलनात्मक रूप से स्नातक पाठ्यक्रम की अपेक्षा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 9.21 प्रतिशत मुस्लिम छात्राओं का ठहराव अधिक पाया गया है लेकिन यह अन्तर बहुत कम है। अतः परिकल्पना संख्या–2 ''स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के ठहराव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'', स्वीकार की जाती है। आरेख–2 में मुस्लिम छात्राओं के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में ठहराव के अन्तर को दर्शाया गया है।

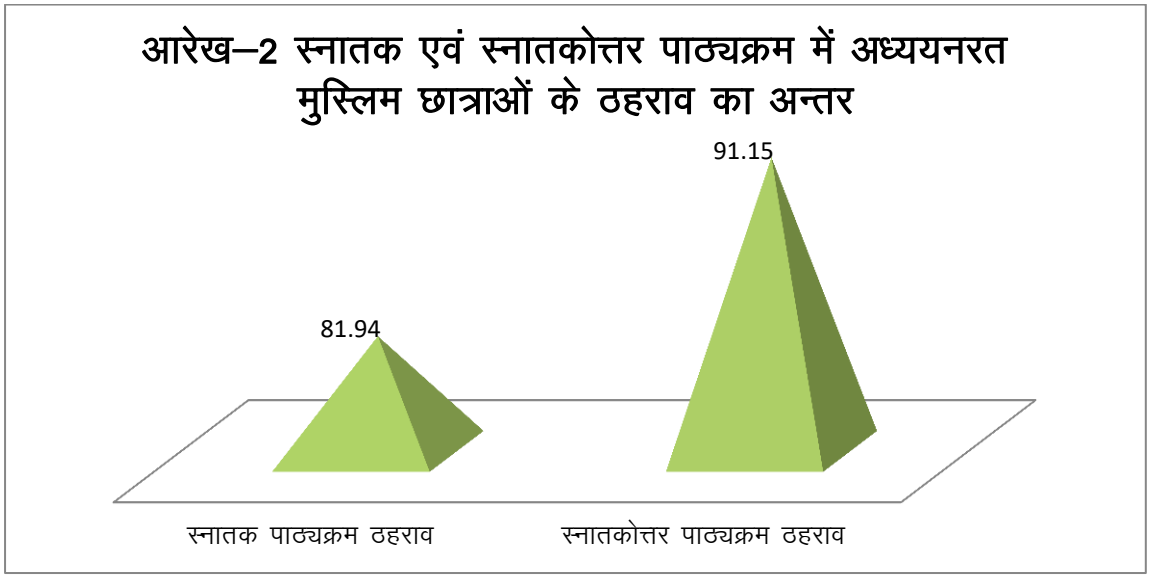

निष्कर्ष (परिकल्पना की स्वीकृति/अस्वीकृति)

- **मुस्लिम छात्राओं के नामांकन की स्थिति संबंधी निष्कर्ष :–**

  स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत समग्र मुस्लिम छात्राओं के नामांकन में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है। स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं का नामांकन 7.84 प्रतिशत एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं का नामांकन 6.81 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की अपेक्षा स्नातक पाठ्यक्रम में 1.03 प्रतिशत मुस्लिम छात्राओं का नामांकन उच्च पाया गया है परन्तु यह अन्तर बहुत कम मात्रा में है। अतः परिकल्पना ''स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'', स्वीकार है।

- **मुस्लिम छात्राओं के ठहराव की स्थिति संबंधी निष्कर्ष**

  स्नातक पाठ्यक्रम में मुस्लिम छात्राओं का ठहराव 81.94 प्रतिशत तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 91.15 प्रतिशत पाया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से स्नातक पाठ्यक्रम की अपेक्षा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 9.21 प्रतिशत मुस्लिम छात्राओं का ठहराव अधिक पाया गया है परन्तु यह अन्तर बहुत न्यून मात्रा में है। अतः परिकल्पना ''स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के ठहराव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'', स्वीकार की गयी।

- **मुस्लिम छात्राओं के नामांकन की स्थिति में सुधार हेतु सुझावात्मक निष्कर्ष**

क्र.स.	मुस्लिम छात्राओं द्वारा अपेक्षित सुझाव	प्रतिशत
1	मुस्लिम छात्राओं के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को निःशुल्क, अनिवार्य और सार्वभौमिक बनाना।	51.83
2	उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छात्राओं के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, यूनिफॉर्म एवं नोटबुक की व्यवस्था की जानी चाहिए।	33
3	मुस्लिम महिला सशक्तिकरण उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक है।	31.5
4	मुस्लिम महिला उच्च शिक्षा प्रणाली में गतिशीलता हेतु विविध कार्यक्रम और रणनीतियाँ तैयार करना।	27.67
5	महाविद्यालयों में गुणात्मक शिक्षा के साथ न्यूनतम फीस रखी जाए।	22
6	उच्च शिक्षा का सम्पूर्ण दायित्व निर्वहन सरकारी स्तर पर होना चाहिए।	20.17
7	अभिभावकों में उच्च शिक्षा की नैतिक समझ का विकास करना।	18.33
8	दलित मुस्लिम बस्तियों में उच्च शिक्षा के लिए निशुल्क बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएं।	11
9	महिला उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने वाले आयोजन करने चाहिए जिससे अभिभावक शिक्षा के महत्त्व एवं कर्तव्यों को जान सकें।	6.83
10	छात्राओं के संतुलित और सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराना।	5.83
11	उच्च शिक्षा के लिए अभिभावकों का भय व संकोच दूर करने के लिए महाविद्यालयों में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करना।	4.33
12	उच्च शिक्षा में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे सरकारी कार्यक्रम की शुरूआत करना।	2.67
13	मुस्लिम स्वयं सेवी संस्थाओं को महाविद्यालय खोलने की स्वीकृति शीघ्र देना।	1.17
14	मुस्लिम छात्राओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु यूनिसेफ को योजना बनाकर क्रियान्वयन करना चाहिए।	0.5

- **मुस्लिम छात्राओं के ठहराव की स्थिति में सुधार हेतु सुझावात्मक निष्कर्ष**

क्र.स.	मुस्लिम छात्राओं द्वारा ठहराव हेतु अपेक्षित सुझाव	प्रतिशत
1	उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के ठहराव हेतु सामाजिक वर्जनाओं के व्यवहारिक चिंतन में परिवर्तन आवश्यक है।	47.33
2	रूचिप्रद गतिविधियों का आयोजन करना।	39.17

3	अभिभावक–अध्यापक मिटिंग का मासिक आयोजन।	29.17
4	नियमित उपस्थिति के लिए छात्राओं की महाविद्यालय गतिविधियों में सहभागिता तय करना।	19
5	महाविद्यालय में ठहराव की आदत विकसित करना।	17
6	मुस्लिम छात्राओं का उच्च शिक्षा से पलायन के कारणों को जानकर समाधान करना।	14.67
7	मुस्लिम छात्राओं के ठहराव को नियमित रखने के लिए पुरस्कार वितरण करना।	12.83
8	महाविद्यालयों में निशुल्क संदर्भ पुस्तकों का वितरण करना।	11.17
9	महाविद्यालय पाठ्यक्रम को नवाचारों से युक्त बनाना।	7.5
10	उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं को अनुकूल वातावरण देकर ठहराव सुनिश्चित करना।	6.5
11	महाविद्यालय निरीक्षक द्वारा छात्राओं की नियमित उपस्थिति के लिए अभिभावकों को पाबन्द करना।	5.83
12	महाविद्यालयों में मुस्लिम छात्राओं के साथ समानता का व्यवहार करना।	5.33
13	महाविद्यालय में ठहराव के लिए सभी बाधाओं को दूर करना।	4.17
14	महाविद्यालयों में गतिविधियों का संचालन मुस्लिम छात्राओं को देने से उनका ठहराव निश्चित होगा।	4.0
15	मुस्लिम छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास करना।	3.0
16	महाविद्यालयों में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन के साथ शिक्षण को नियमित करना।	2.17
17	आत्मनिर्भरता के लिए मुस्लिम छात्राओं की मदद करना।	1.33

शैक्षिक निहितार्थ

उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में कुल नामांकन में से मुस्लिम छात्राओं का नामांकन बहुत ही कम पाया गया है। मुस्लिम छात्राओं के ठहराव में स्नातक स्तर पर बढ़ते क्रम में क्रमशः प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष में कमी दर्ज की गई है; इसी प्रकार स्नातकोत्तर पूर्वाद्ध से उत्तरार्द्ध में क्रमशः गिरावट के आंकड़ें प्राप्त हुए है।

स्नातक–स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के नामांकन की स्थिति में सुधार हेतु सरकार द्वारा उच्च शिक्षा को निःशुल्क, अनिवार्य और सार्वभौमिक बनाया जाएं एवं छात्राओं के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, यूनिफॉर्म एवं नोटबुक की व्यवस्था की जानी चाहिए। उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के ठहराव हेतु सामाजिक–सांस्कृतिक वर्जनाओं के व्यवहारिक चिंतन में बदलाव, रूचिप्रद गतिविधियों में मुस्लिम छात्राओं की सहभागिता एवं अभिभावक–अध्यापक मिटिंग का मासिक आयोजन आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध से उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के नामांकन एवं ठहराव की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही मुस्लिम छात्राओं के उच्च शिक्षा के संदर्भ में नामांकन एवं ठहराव संबंधी समस्याओं को दूर करने हेतु सुझावों की जानकारी भी प्राप्त होती है। शोध के परिणामों से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम छात्राएँ उच्च शिक्षा प्रति सचेत है।

संदर्भ सूची

1 एयरन, जे.डब्ल्यू. (1967) : **भारत में कॉलेज शिक्षा, योजना आयोग**, भारत सरकार, नई दिल्ली।

2 हुसैन, एस.एस. और अशरफ, एस.ए. (1979) : **मुस्लिम एजुकेशन में संकट**, इस्लामी शिक्षा सीरीज़, होडर एंड स्टफटन, किंग अब्दुलअज़ीज़ यूनिवर्सिटी, जेद्दा।

3 अब्दुल्ला (1997) : **मुस्लिम महिलाओं का शैक्षिक पिछड़ापन,** सर्वेक्षण, नई दिल्ली, हमदर्द एजुकेशनल सोसायटी।

4 सेख रहीम मोंडल (1997) : **मुसलमानों की शैक्षिक स्थितिः समस्याएं संभावनाएँ और प्राथमिकताएँ,** अंतर–भारत प्रकाशन, नई दिल्ली।

5 हजीरा कुमार (1999) : **एस टेटस ऑफ मुस्लिम वुमेन इन इंडिया**, जियान पब्लिकेशन। नई दिल्ली,, पृ. 95

6 अरुण कुमार (2002) : **महिला सशक्तीकरण**, सरूप प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 97

7 अहमद इमित्याज (2004) : **मध्यकालीन मुस्लिम भारत का इतिहास** (8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक एक सर्वेक्षण) पटना नेशनल पब्लिकेशन।

8 सरीन एवं सरीन (2004) : **शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ,** रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर।

9 सिन्हा, आर.के. (2006) : **मुस्लिम विधि,** केन्द्रीय लॉ एजेन्सी।

10 डॉ. कपिल एच. के. (2008) : **सांख्यिकी के मूल तत्व**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

11 फजल शाहनवाज (2013) : **शिक्षा मुस्लिम महिलाओं की प्रगति का मार्ग**, न्यूज़ भारतीय हिंदी।

12 अबर साइस्ता (2016) : **दैनिक भास्कर** : महिलाएं प्लेन उड़ा ले या साइंस पढ़ ले लेकिन जेहनी तरक्की जरूरी (6 मार्च 2016)

13 गीता कुमारी (2016) : **मुस्लिम परिवरों में परिवर्तित दृष्टिकोण का अध्ययन,** सं. 5 (1) पृष्ट 100–105

14 डब्ल्यू डब्ल्यू गूगल डॉट कॉम।

**** Corresponding Author***

रिज़वाना शेख, *पीएच.डी. शोधार्थी*

डॉ. सरिता मेनारिया, *सहायक आचार्य*

लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड.टू.बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राजस्थान)

Email - sheikhriz50@gmail.com, Mob. 8003456340